(ਚਿਤਰ ਸੰ. 1)

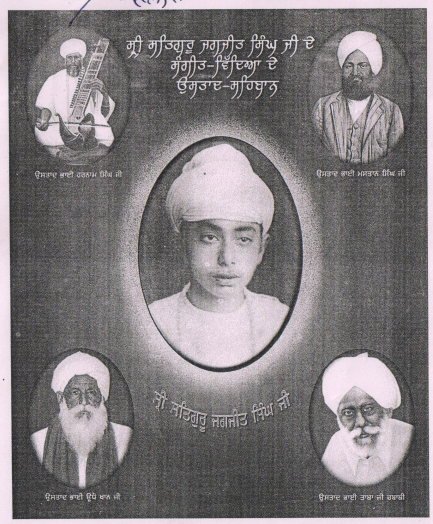

ਬਚਪਨ ਦੇ ਵਿੱਚ ਰਾਗ ਵਿੱਦਿਆ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਪਾਸੋਂ ਮਾਣੀ,
ਸਾਜ਼ ਸੁਰਾਂ ਦਾ ਸੰਗਮ ਬਣ ਕੇ ਗੂੰਜੀ ਅਨਹਦ ਬਾਣੀ।

(ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜਗਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਬਾਲ ਤੇ ਯੁਵਾ ਅਵਸਥਾ ਸਮੇਂ ਦੀ ਰਾਗ ਵਾਲੀ ਕਾਪੀ ਦੀਆਂ ਕੁਝ ਵੰਨਗੀਆਂ)

(ਚਿਤ੍ਰ ਸੰ. ੨)

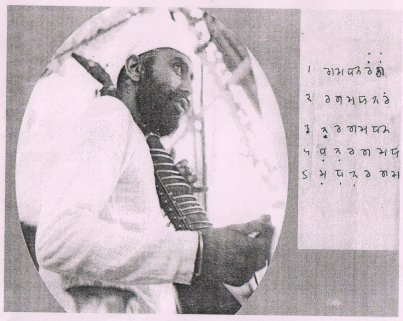

ਤਾਊਸ਼ ਤੇ ਅਭਿਆਸ ਲਈ
ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜਗਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੀ ਹਸਤ-ਲਿਖਤ ਸਰਗਮ

(ਚਿਤਰ ਨੰ. 3)

ਦੇਹਰਾਦੂਨ ਉ. ਵਿਲਾਇਤ ਖਾਂ ਦੇ ਘਰ ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਨਾਲ ਤਾਨਪੂਰੇ ਤੇ ਸੰਗਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ, ਉ. ਵਿਲਾਇਤ ਖਾਂ ਤੇ ਪੰ. ਰਾਜਨ ਮਿਸ਼ਰਾ

ਤੇਰਾ ਓਹ ਗੁਣ-ਗੁਣਾਉਣਾ ਤੇ ਗੀਤ ਰੱਬੀ ਗਾਉਣਾ,
ਸੰਗੀਤ ਦਾ ਉਹ ਆਲਮ, ਰਾਹੀਆਂ ਨੇ ਰੁਕ ਖਲੋਣਾ।

ਸੰਸਾਰ ਪ੍ਰਸਿਧ ਪੰ. ਬਿਰਜੂ ਮਹਾਰਾਜ ਦੇ ਕੱਥਕ ਕੇਂਦਰ (ਦਿੱਲੀ) ਵਿਖੇ ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੀ ਆਪਣੇ ਭੈਜੇ ਸ਼ਿਸ਼ ਅਮਰ ਸਿੰਘ ਅੰਬਾ ਦਾ ਨ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰੀਕਸ਼ਣ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ, ਨਾਲ ਖੱਬੇ ਬੈਠੇ ਪੰ. ਬਿਰਜੂ ਮਹਾਰਾਜ

ਰਹਿਨੁਮਾਂ ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ

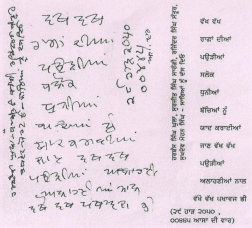

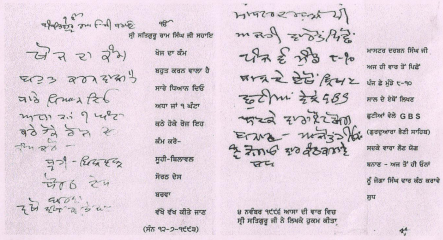

ਸੰਗੀਤ ਨੂੰ ਪ੍ਰਫੁਲਿਤ ਕਰਨ ਲਈ
ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜਗਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਸੇਵਕਾਂ ਨੂੰ ਆਦੇਸ਼ - ਕੁਛ ਨਮੂਨੇ

चित्र सं॰ 5

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्री सतगुरु राम सिंह जी का चित्र अर्पित करते हुए।

चित्र सं. 6

'रष्ट्रीय रक्षा कोष' में योगदान प्रदान करने हेतु श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी का धन्यवाद करते हुए तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरु (दिल्ली 1962 ई:)।

(ਚਿਤ੍ਰ ਸੰ: 7)

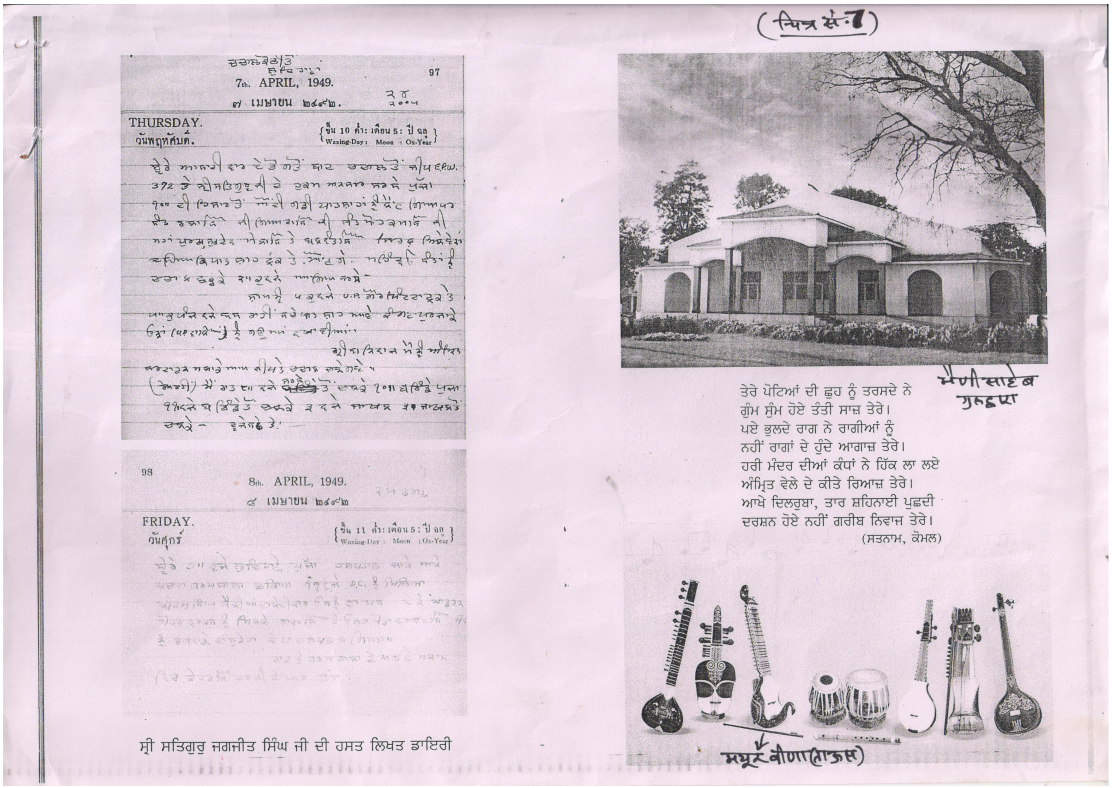

97

7th. APRIL, 1949.

๗ เมษายน ๒๔๙๒.

THURSDAY.
วันพฤหัศบดี.

{ขึ้น 10 ค่ำ: เดือน 5: ปีฉลู / Waxing-Day: Moon: Ox-Year}

98

8th. APRIL, 1949.

๘ เมษายน ๒๔๙๒.

FRIDAY.
วันศุกร์

{ขึ้น 11 ค่ำ: เดือน 5: ปีฉลู / Waxing-Day: Moon: Ox-Year}

ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਜਗਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੀ ਹਸਤ ਲਿਖਤ ਡਾਇਰੀ

ਭੈਣੀ ਸਾਹਿਬ ਗੁਰਦੁਆਰਾ

ਤੇਰੇ ਪੋਟਿਆਂ ਦੀ ਛੂਹ ਨੂੰ ਤਰਸਦੇ ਨੇ
ਗੁੰਮ ਸੁੰਮ ਹੋਏ ਤੰਤੀ ਸਾਜ਼ ਤੇਰੇ।
ਪਏ ਭੁਲਦੇ ਰਾਗ ਨੇ ਰਾਗੀਆਂ ਨੂੰ
ਨਹੀਂ ਰਾਗਾਂ ਦੇ ਹੁੰਦੇ ਆਗਾਜ਼ ਤੇਰੇ।
ਹਰੀ ਮੰਦਰ ਦੀਆਂ ਕੰਧਾਂ ਨੇ ਹਿੱਕ ਲਾ ਲਏ
ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲੇ ਦੇ ਕੀਤੇ ਰਿਆਜ਼ ਤੇਰੇ।
ਆਖੇ ਦਿਲਰੁਬਾ, ਤਾਰ ਸ਼ਹਿਨਾਈ ਪੁਛਦੀ
ਦਰਸ਼ਨ ਹੋਏ ਨਹੀਂ ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜ ਤੇਰੇ।
(ਸਤਨਾਮ, ਕੋਮਲ)

ਮਯੂਰ ਵੀਣਾ (ਤਾਊਸ)

चित्र
सं. 8

चित्र सं.१

चित्र सं.
10

Documentation Report

Exploring and Safeguarding Mayūr Veenā and its techniques

योजना का परिचय एवं उद्देश्य–

पंजाब की लुप्तप्राय सांस्कृतिक विरासत के लोकप्रिय भाग मयूरवीणा एवं इसकी टेक्निक्स की पंजाब में वर्तमान समय में क्या स्थिति है, इसकी खोज करना तथा इससे सम्बन्धित अभिलेख, रिकार्डिंग आदि का संकलन करना।

योजना का क्रियान्वयन–

पंजाब में 15 अप्रैल से 29 अप्रैल 2015 तक चंडीगढ़, जालंघर, अमृतसर, लुधियाना, पटियाला से विविध जानकारियाँ निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत Observation and Interview method के द्वारा प्राप्त की गयी।

1. मयूरवीणा की निर्माण विधि
2. मयूरवीणा की वादन टेक्निक्स
3. मयूरवीणा की कलाकारों की परंपरा

प्रथम बिन्दु के अन्तर्गत– सरदार शुभेन्द्रर सिंह (वाद्य निर्माण विशेषज्ञ), जालंधर के वार्ता की रिकार्डिंग की गयी।(चित्र सं.10)

द्वितीय बिन्दु के अन्तर्गत– विदुषी श्रीमती सुरक्षा दत्ता चंडीगढ़ के वार्ता, सरदार संदीप सिंह (जालंघर) के वार्ता एवं मयूरवीणा वादन की रिकार्डिंग की गयी। तकनीकी पक्ष से सम्बन्धित वार्ता, तुलनात्मक मयूरवीणा प्रस्तुति साक्षात्कारकर्ता श्री कुमार मिश्र द्वारा प्रस्तुत की गयी।

तृतीय बिन्दु के अन्तर्गत– मयूरवीणा के कलाकारों की परंपरा के बारे में जानकारियों के संकलन हेतु विद्वान सरदार हरविंदर सिंह (भैणी साहेब,

लुधियाना) के वार्ता की रिकार्डिंग की गयी। संबंधित परपंरा के बारे में विविध जानकारियां अन्य जानकारों व विद्वानों से भी संकलित की गयी जिनके नाम निम्न हैं –

चंडीगढ़– डा0 अरविंद शर्मा (गंधर्व संगीत महाविद्यालय), सचिव, पंजाब संगीत नाटक अकादमी, सरदार प्रीतम सिंह (ए0आई0आर0 चंडीगढ़), सरदार गुरदयाल सिंह 'लाली'।

लुधियाना– सरदार करतार सिंह

जालंधर– सरदार गुरूदेव सिंह, सरदार कृपाल सिंह

पटियाला– सरदार हरप्रीत सिंह

अमृतसर– सरदार तेजेन्दर सिंह खालसा एवं खेमसिंह एंडसन्स

इनके आलावा अनेकानेक स्थानीय जानकारों से विविध जानकारियाँ प्राप्त की गयी।

विविध स्रोतों से प्राप्त जानकारियों के आधार पर संबंधित खोज व परिरक्षण कार्य की रिपोर्ट प्रस्तुत है –

मयूरवीणा (ताऊस) एवं मयूराकृति विहीन मयूरवीणा –दिलरूबा भारत की पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत के लोकप्रिय भाग रहे हैं जो समय की धारा में प्रभावित होकर आज लुप्तप्राय हो गये हैं।

पाँच नदियों, रावी, झेलम, सतलज, व्यास और चेनाब के बीच में बसा प्रदेश पंजाब एक ओर प्राकृतिक तौर पर हरा–भरा व उपजाऊ प्रदेश है तो दूसरी ओर कला व संस्कृति की अपनी विरासत को पुष्पित पल्लवित करने के लिए उर्वरा सांस्कृतिक धरातल भी उपलब्ध है। पंजाब में सिख समाज के आध्यात्मिक गुरूमत संगीत के साथ तथा कपूरथला एवं पटियाला के

राजदरबारों में मयूरवीणा (ताऊस) वाद्य को पूर्ण प्रोत्साहन व सम्मान प्राप्त हुआ। गायन व मयूरवीणा वादन को एक साथ प्रस्तुत करते हुए गायन के सूक्ष्म आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति में मयूरवीणा की सुमधुर व संवेदना से युक्त स्वरलहरी के संयोग से प्रभावकारी भावात्मक वातावरण कायम होता था। लाइट क्लैसिकल शैली पर आधारित मयूरवीणा की प्रस्तुति गायन के साथ होती थी। शनैः शनैः शास्त्रीय संगीत शैली में भी सोलो मयूरवीणा एवं दिलरूबा की प्रस्तुतियाँ कुछ वादक करने लगे। पूरे पंजाब में आज मात्र 6 मयूरवीणा एवं दिलरूबा दोनों के ही वादक उपलब्ध हैं।

पंजाब में एक दशक पूर्व मयूरवीणा का काफी लंबे समय तक प्रचलन समाप्त सा हो गया था तथा इसके स्थान पर दिलरूबा का प्रचलन हुआ। एक दशक से मयूरवीणा के प्रति लोकप्रियता में पुनः वृद्धि हुयी है तथा 6 उपलब्ध दिलरूबा वादक मयूरवीणा भी बजा रहे हैं।

संबंधित विषयक खोज व परिरक्षण कार्य के अन्तर्गत सर्वप्रथम पंजाब में खोज कार्य प्रारम्भ किया गया।

मयूरवीणा की निर्माण विधि–

पुरातन तत वाद्य (ताऊस) मयूरवीणा सरस्वती वीणा एवं बड़ी सारंगी का मिश्रित रूप कहा जा सकता है। इसका ऊपरी एवं मध्य का भाग डॉड़ व निचला भाग कुंडी कहा जाता है। डाँड़ का रूप सरस्वतीवीणा जैसा है तथा काठ की कुंडी जिसमें चमड़ा मढ़ा होता है का रूप सारंगी जैसा है दूसरे सारंगी की गज से इसे बजाते हैं।

मयूरवीणा तुन की लगभग 10 वर्ष पुरानी लकड़ी के द्वारा निर्मित करते हैं। तुन की उत्तम क्वालिटी की लकड़ी आसाम एवं सहारनपुर में उपलब्ध है। कुंडी के आकार के अनुसार निश्चित माप के अनुसार डाँड़ तैयार करते हैं तथा कुंडी एवं डॉड़ को गोंद से जोड़ते समय दोनों लकड़ियों के रेशों को

बराबर सटीक रूप से आपस में मिलाते हैं यदि रेशे सटीक नहीं बैठे तो वाद्य की गूँज कम हो जायेगी। इसकी कुंडी में बकरे की खाल मढ़ी जाती है, बकरी की नहीं। क्योंकि बकरी की खाल पतली व कमजोर होती है और बकरे की मोटी व मजबूत। खाल के ऊपर ब्रिज रखते समय ब्रिज के नीचे चमड़े की एक पट्टी स्थित करना आवश्यक है ताकि ब्रिज का प्रेसर पाकर चमड़ा फटे नही। इस वाद्य की कमानी या गज में शीशम की लकड़ी प्रयुक्त होती है तथा इसमें घोड़े की पूँछ के बाल, जो आज काफी दुर्लभ हो गये हैं, लगाये जाते है, घोड़ी के बाल नहीं। क्योंकि घोड़ी मूत्र विसर्जन करती रहती है जो उसके पूँछ के बालों पर गिरता है। हमेशा मूत्र के बालों पर गिरते रहने से बाल कमजोर हो जाते हैं तथा वादन करने पर जल्दी टूटने लगते हैं।

मयूरवीणा को बड़े इसराज या बड़े दिलरूबा के रूप में जाना जाता है। विदुषी सुरक्षा दत्ता जी (चंडीगढ़) के अनुसार इसराज, दिलरूबा एवं मयूरवीणा एक ही वाद्य हैं कुंडी का आकार तीनों का थोड़ा–थोड़ा अलग होता है। इसराज की कुंडी गोल, दिलरूबा की चौकोर एवं मयूरवीणा की कुंडी मोर के धड़ जैसी आकृति की होती है। तीनों की वादन की टेक्निक एक है। भारत रत्न पंडित रविशंकर की पुस्तक 'Music-my-life' में मयूरवीणा, इसराज, दिलरूबा के विविध चित्र प्रकाशित हैं। इंटरनेट पर भी मयूरवीणा के चित्र website- www.mayurveena.com एवं youtube.com में उपलब्ध हैं। अलवर के राजकीय संग्राहलय में मयूरवीणा परिरक्षित है। भैणी साहब, लुधियाना के गुरूद्वारा के वाद्य संग्रहालय में पुरानी मयूरवीणा व दिलरूबा आदि उपलब्ध हैं जिनके चित्र संलग्न फोटोग्राफ, एलबम के वीडियो सीडी में उपलब्ध हैं।

मयूरवीणा का प्राप्ति स्थल– पंजाब में मयूरवीणा एवं इसके आंशिक परिवर्तित रूप दिलरूबा के प्रख्यात निर्माता राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त सरदार गुरूदयाल सिंह जालंधर हैं। इनके अतिरिक्त अमृतसर के खेमसिंह एंड सन्स (हाल बाजार) एवं खालसा म्यूजिकल एकेडेमी इंटरनेशनल (जसपाल नगर

सुलतानविंड रोड, अमृतसर) में भी मयूरवीणा व दिलरूबा उपलब्ध हो सकती हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार ये वाद्य का ढाँचा लखनऊ से तैयार कराके उसमें फिटिंग–सेटिंग स्वयं करके विक्रय कर देते हैं। अब इनके ऊपर इन वाद्यों के निर्माण के दायित्व का बोझ बढ़ रहा है। क्योंकि पंजाब व अन्य स्थानों के गुरूमत संगीत शिक्षण केन्द्रों में दिलरूबा के साथ–साथ मयूरवीणा के भी प्रशिक्षण का प्रचलन लगभग एक दशक से बढ़ा है।

<u>मयूरवीणा की टेक्निक्स–</u>

पंजाब में उपलब्ध दिलरूबा व मयूरवीणा वादकों की वादन टेक्निक्स समान है। ये सारंगी की टेक्निक्स सूत, कन, गमक व गज का संतुलित संचालन आदि प्रयुक्त करते हैं। 100 वर्ष पहले पंजाब में गुरूमत संगीत के साथ मयूरवीणा (ताऊस) व दिलरूबा को बायें हाथ की दूसरी 'मध्यमा' उँगली द्वारा तर्जनी के सहयेाग से बजाते थे जिनमें लड़ियाँ भी बनती थी। इस समय पंजाब में इस टेक्निक्स की जानकारी कहीं भी उपलब्ध नहीं है। जालंधर में आकाशवाणी के बी हाई ग्रेड के दिलरूबा वादक सरदार संदीप सिंह के वार्ता व मयूरवीणा वादन की रिकार्डिंग श्री कुमार मिश्र द्वारा एस0एन0ए0 के संबंधित प्रोजेक्ट के अन्तर्गत की गयी जिसमें संदीप जी ने सारंगी की टेक्निक्स के द्वारा मयूरवीणा का सुरीला व सुमधुर वादन किया (चित्र सं. 1) वार्ता के दौरान मयूरवीणा वादक एवं साक्षात्कारकर्ता श्री कुमार मिश्र ने भी मयूरवीणा पर पंजाब की पुरानी व दुर्लभ लड़ी टेक्निक्स को प्रस्तुत किया ताकि पंजाब के अतीत एवं आज के वादन की टेक्निक्स के रूप क्या हैं, यह स्पष्ट हो सके।

सारंगी में परदे नहीं होते हैं। मयूरवीणा या दिलरूबा में परदे होते हैं। यदि वादक गज के द्वारा बाज के तार पर सूत, कन, गमक की निकासी बिना परदे के स्पर्श के करते हैं तो स्वरावलियाँ तो उभरेंगी लेकिन खामोश परदों की सार्थकता, इनके होने का औचित्य प्रतीत नहीं होगा तथा सारंगी और

मयूरवीणा में फर्क नहीं दिखायी पड़ेगा। इसलिए तकनीकी दृष्टि से मयूरवीणा के परदों के कार्य भी सारंगी टेक्निक्स के साथ–साथ प्रयुक्त हों तो इस वाद्य का मौलिक वादन सुनाई पड़ेगा। बाज के तार एवं परदों को उंगलियों से दबाकर आपस में एकदूसरे से सटाते नहीं है बल्कि उँगलियों को इस ढंग से रखेंगे कि तार व परदें दोनों का एक साथ स्पर्श उंगली के गद्दे से हो सके। तार व परदे दोनों को उंगली के गद्दे से सटाने से विशेष क्रिया के द्वारा लड़ियाँ बनती है जो बिना अच्छे जानकार गुरू के मार्गदर्शन के बिना उत्तम ढंग से निकाली नहीं जा सकती है। गुरू ही बता सकते हैं कि दोनों उँगलियों में कितना–कितना पावर देना है ताकि सटीक लड़ियाँ निकल सकें। इन लड़ियों के द्वारा स्वरावलियों को सजाया जा सकता है। लड़ियों की खूबसूरत सजावट वादन को प्रभावकारी बनाती है परन्तु ध्वनि की प्रकृति की दृष्टि से लड़िया मयूरवीणा दिलरूबा, इसराज की अपनी नादात्मक धरोहर है। गले से इन्हें नहीं निकाला जा सकता है न ही किसी अन्य वाद्य पर इनकी शुद्ध व सटीक अवतारणा हो सकती है। मयूरवीणा की ही ये मूल टेक्निक्स है।

पंजाब के गुरूमत संगीत के साथ मयूरवीणा काफी समय से प्रयुक्त है। मूल मयूरवीणा काफी लंबी बड़ी व वजनदार होती थी। इसकी डाँड़ व कुंडी को थोड़ा छोटा करके दिलरूबा तैयार किया गया। औसत लंबाई एवं मध्यम साइज की उँगलियों वाले वादक के लिए इसे बजाने में बैलेंस बनाने में सुविधा होती है। परन्तु कुछ पुराने दिलरूबा बड़े आकार के भी दिखाई पड़े जिनके मयूरवीणा जैसे आकार दृष्टिगत हुए।

मयूरवीणा की परंपरा–

मयूरवीणा व दिलरूबा का पंजाब में काफी प्रचारित होने का सर्वप्रमुख कारण है गुरूमत संगीत के साथ उक्त वाद्यों का अन्योन्याश्रित संबंध। गुरूमत

संगीत के पदों 'शबद' के गायन के साथ उक्त वाद्यों की संगति का चलन पंजाब में पुरातन समय से चला आ रहा है।

गुरूमत संगीत में गुरूवाणी, शबद को निश्चित राग व ताल में निबद्ध करके आध्यात्मिक उपासना के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है। उन वाद्यों की सुमधुर स्वरावलियो के द्वारा जब गायन की संगति की जाती है तो गायकी में वाद्य की कोमलता, कशिश, संवेदना आदि के मिश्रण से सांगीतिक प्रभाव सशक्त रूप में दृष्टिगत होता है।

गुरू नानकदेव जी द्वारा प्रारंभ कीर्तन की परंपरा में पहले गायन के साथ रबाब की संगति होती थी। बाद में अंगद देव ने शबद को विविध रागों में गाकर प्रस्तुत करने की गुरूमत संगीत की रागी परंपरा की शुरूआत की। रागी जत्थों में मयूरवीणा व दिलरूबा का चलन काफी रहा है। परन्तु आजकल अनेक रागी जत्थे हारमोनियम की संगति का ज्यादा प्रयोग कर रहे हैं। जिससे प्रस्तुति का स्वरूप परंपरा से अलग दृष्टिगत हो रहा है।

पंजाब के लुधियाना में लुधियाना–चंडीगढ़ मार्ग पर सिथत भैणी साहेब में आध्यात्मिक संगीत के साथ मयूरवीणा तथा दिलरूबा की संगति का चलन चला आ रहा है। यहाँ 70 वर्ष पूर्व मयूरवीणा की संगति गुरूमत संगीत के साथ होती थी। बाद में मयूरवीणा के आंशिक लघु रूप दिलरूबा की संगति होने लगी। प्राप्त जानकारी के अनुसार यहाँ लगभग एक दशक से पुनः दिलरूबा के साथ–साथ मयूरवीणा (ताऊस) का भी प्रशिक्षण छात्रों को दिया जा रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के सूत्रधार श्री सतगुरू रामसिंह के स्थल भैणी साहेब के गुरूद्वारा के संग्रहालय में काफी पुराने मयूरवीणा एवं दिलरूबा वाद्य (चित्र सं. 8) परिरक्षित हैं तथा पहले के संबंधित संगीतज्ञों के दुर्लभ चित्र भी परिरक्षित हैं। इन सामग्रियों की फोटोग्राफी की गयी। फोटाग्राफ्स फोटो एलबम वाले संलग्न वीडियों सी0डी0 में उपलब्ध हैं।

सतगुरू रामसिंह, सतगुरू हरी सिंह, सतुगरू प्रताप सिंह, सतगुरू जगजीत सिंह एवं वर्तमान सतगुरू उदय सिंह जी की पावन स्थली भैणी साहेब में नामधारी सिक्ख समाज के गुरूमत संगीत की विशिष्ट प्रस्तुति का प्रचलन चला आ रहा है जिसमें विविध वाद्यों सितार, सारिंदा, सारंगी, रवाब, तानपुरा, मयूरवीणा या दिलरूबा, तबला जोड़ी, पखावज की संगति की जाती है। (चित्र सं.1) भैणी साहेब में दिलरूबा के साथ–साथ अब मयूरवीणा (ताऊस) की भी शिक्षा छात्रों को दी जा रही है। भैणी साहेब में हारमोनियम का प्रयोग वर्जित है। यहाँ तंत्रवाद्यों की ही संगति का प्रचलन है। भैणी साहेब के नामधारी संत सतगुरू जगजीत सिंह के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान रहे हैं। ये गुरूमत संगीत का गायन स्वतः दिलरूबा (मयूरवीणा का लघु रूप) का वादन करके प्रस्तुत करते थे। (चित्र सं.2) एक चित्र में सतगुरू जगजीत सिंह का चरण स्पर्श भूतपूर्व प्रधानमंत्री सरदार मनमोहन सिंह कर रहे हैं।–(चित्र 4 संलग्न है) एक (चित्र सं.6) में भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व0 जवाहर लाल नेहरू तथा एक चित्र में भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी के साथ सतगुरू जगजीत सिंह हैं।–(चित्र 5 संलग्न है) चित्र सं0 3 में गुरूमत संगीत के संरक्षक सतगुरू जगजीत सिंह दिलरूबा बजाकर गा रहे हैं उनके साथ तानपूरों पर क्रमशः उस्ताद विलायत खाँ एवं पं0 राजन मिश्र संगत कर रहे हैं। (चित्र सं0 3 संलग्न है) सतगुरू जगजीत सिंह का जन्म 22.11.1920 तथा देहांत 13.12.2012 को हुआ था। इनका जन्मस्थान भैणी साहब था। इनके पिता सतगुरू प्रताप सिंह थे। जगजीत सिंह जी ने दिलरूबा की शिक्षा मयूरवीणा (ताऊस) के वादक उस्ताद हरनाम सिह जिनका चित्र सं0–1 संलग्न है, से प्राप्त की थी। गुरू नानकदेव जी के साथ इनके धर्मभाई मिरासी मरदाना रवाब बजाते थे। दूसरे गुरू अंगद देव जी कीर्तन बिना वाद्य के, तीसरे गुरू श्री अमरदास जी कीर्तन जोड़ी से करते थे। चौथे गुरू रामदास के दरबार में बाँसुरी से कीर्तन होता था। पांचवे गुरू अरजनदेव (गुरू ग्रंथ साहब के रचयिता) सारिंदा बजाकर कीर्तन गाते थे। छठें

गुरू श्री हरगोविंद साहब पखावज पर कीर्तन करते थे। सातवे गुरू हरराय साहब खड़ताल से गाते थे। आठवें गुरू हरकृषन बाँसुरी के साथ कीर्तन करते थे। नौवें गुरू तेग बहादुर रवाब पर ही कीर्तन करते थे। दसवें गुरू गोविन्द सिंह सारिंदा, सितार, रवाब जोड़ी, के साथ कीर्तन करते थे। दरबार साहेब में सितार, रूद्र वीणा, संतूर, सरस्वतीवीणा, बाँसुरी, सारंगी आदि वाद्यों का प्रचलन नहीं था। मयूरवीणा (ताऊस) का चलन था। गुरूमत संगीत की शिक्षा हेतु पटियाला विश्वविद्यालय, पटियाला के गुरूमत संगीत विभाग गठित किया गया है। जहां गुरूमत संगीत के प्रचार, शोध एवं परिरक्षण की योजनाएँ क्रियान्वित की गयी हैं। गुरूमत संगीत की लाइब्रेरी, अभिलेखागार, प्रशिक्षण विभाग आदि यहां उपलब्ध है। गुरूमत संगीत के गायन की शिक्षा कुछ छात्रों को दिलरूबा या मयूरवीणा बजवा कर दी जाती है। कुछ छात्रों को अन्य वाद्यों के वादन की शिक्षा देकर साथ में गँवाते हैं। यहाँ गुरूमत संगीत विभाग में अध्यक्ष हैं डा0 गुरनाम सिंह।

पंजाब के मयूरवीणा व दिलरूबा (दोनों वाद्यों) के वादक–

दिवंगत–

1. स्व0 रागी महंत गज्जा सिंह, कपूरथला राजदरबार के मयूरवीणा वादक 19वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में
2. स्व0 उस्ताद हरनाम सिंह, भैणी साहेब, लुधियाना
3. स्व0 सतगुरू जगजीत सिंह, भैणी साहेब, लुधियाना
4. स्व0 प्यारा सिंह पदम
5. स्व0 भाई रागी अवतार सिंह

वर्तमान कलाकार– **संपर्क माध्यम**

1. उस्ताद रणवीर सिंह, यू0के0 (विवरण youtube.com में उपलब्ध)
2. सरदार अमनदीप सिंह, पटियाला – 07696023437

3. सरदार संदीप सिंह, जालंधर– 09876147422
4. सरदार कृपाल सिंह (यू0के0) –भैणी साहेब, लुधियाना–0161–2833199
5. सरदार बलवंत सिंह, अफ्रीका –भैणी साहेब, लुधियाना–0161–2833199
6. सरदार अर्शप्रीत सिंह, पटियाला – 09876063428–पी0पी0

पंजाब की उक्त वाद्यों की परंपरा के विद्वान–

1. डा0 गुरूनाम सिंह, विभागाध्यक्ष, गुरूमत संगीत विभाग, पटियाला विश्वविद्यालय पटियाला (08146565012),
2. डा0 पंकज माला शर्मा, संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ मो– 9878822742, 9316022742
3. श्रीमती सुरक्षा दत्ता, चंडीगढ़–9815703352
4. डा0 अरविंद शर्मा, चंडीगढ़ –9815703352
5. सरदार प्रीतम सिंह, चंडीगढ़–9417192623
6. सरदार कृपाल सिंह, जालंधर - 9417639228
7. सरदार करतार सिंह, लुधियाना - 9876063428
8. सरदार हरप्रीत सिंह, पटियाला - 9915915233
9. सरदार गुरूदयाल सिंह, जालंधर-9814218198
10. सरदार शुभेन्दर सिंह, जालंधर - 9814682318
11. सरदार हरविन्दर सिंह, भैणी साहेब - 9023086226

निष्कर्ष–

पंजाब में काफी समय से विलुप्त मयूरवीणा की लोकप्रियता एक दशक से पुनः पंजाब में प्रारम्भ हुयी है। गुरूमत संगीत प्रशिक्षण केन्द्रों में दिलरूबा के साथ–साथ मयूरवीणा के भी प्रशिक्षण का कार्य प्रारंभ हो चुका है। रूचि के अनुसार विद्यार्थी को गुरूमत संगीत गायन के साथ संगति हेतु सितार या सरोद या सारंगी या दिलरूबा मयूरवीणा की शिक्षा दी जा रही है। जो विद्यार्थी इस प्रशिक्षण में दक्ष हो जाते हैं उन्हें रागी जत्थों में शामिल होने योग्य माना जाता है।

अभी तक तो पंजाब में 6 मयूरवीणा वादक दृष्टिगत हो रहे हैं। उम्मीद है कि एक दशक बाद नये छात्रों के प्रशिक्षित होने के बाद इसकी संख्या में काफी वृद्धि हो सकती है।

सुझाव–

भैणी साहब लुधियाना एवं अन्य कुछ स्थानों के पूर्व मयूरवीणा वादक दूसरी उँगली से वादन करते थे जिससे सुन्दर लड़ियां बनती थी। इस टेक्निक्स की जानकारी अब कहीं भी उपलब्ध नहीं है। आज के वादक सारंगी टेक्निक्स का प्रयोग कर रहे हैं। यह लड़ी टेक्निक्स सिर्फ़ लखनऊ के पं0 श्री कुमार मिश्र के पास उपलब्ध है। जालंधर में सरदार संदीप सिंह की मयूरवीणा वादन की हुयी रिकार्डिग में श्री मिश्र ने तुलनात्मक विवेचन के दौरान इस टेक्निक्स का वादन किया है।

1. मयूरवीणा की इस मूल एवं पंजाब के पूर्व की सांस्कृतिक विरासत की बहुमूल्य तकनीकी संपदा की शिक्षा पंजाब के संबंधित विषयक छात्रों को श्री मिश्र से दिलाये जाने के बारे में विचार किया जाना प्रस्तावित है।
2. पंजाब के वर्तमान में उपलब्ध 6 मयूरवीणा वादकों के वादन के प्रचार प्रसार हेतु एस0एन0ए0 द्वारा समारोह किया जाना प्रस्तावित है जिसमें श्री कुमार मिश्र के मयूरवीणा वादन विषयक सोदाहरण व्याख्यान को भी सम्मिलित किया जाना प्रस्तावित है।

सर्वेक्षण दल के सदस्य–

1. पं0 श्री कुमार मिश्र, Documentation
2. श्री सुरेश कुमार यादव, सर्वेक्षण सहायक
3. श्री नन्द कुमार मिश्र, वीडियो रिकार्डिंग

श्री कुमार मिश्र
(Shri Kumar Mishra)
441, तीसरा मार्ग
राजेन्द्रनगर, लखनऊ-226004
मो-9838831283
दि. 2.6.2015